ॐ तत्सत्

प्रार्थना व गायत्री

तथा

वैदिक सूक्त व प्रार्थना मंत्र

उपदेष्टा

ब्रह्मीभूत श्री १०८ स्वामी परमानन्द जी महाराज
संस्थापक, श्री भगवद्भक्ति आश्रम, रेवाड़ी व जींद

—०—

अर्पण करता हूं मैं तुमको,
तन मन धन सब अपना।
तेरा तुझको अर्पण करके,
कहता जग में झूठा अपना॥

★

वितरण कराई।
सम्वत् २०३०

अमूल्य
१०८ गायत्री जप

श्री श्रीकृष्ण गुप्ता ४४१२, क्लोथ मार्केट, दिल्ली—६

आरती

लहरा रही है ज्योति चिदानन्द की।
(चिदानन्द की परमानन्द की) ॥

सब ब्रह्माण्डों के पृष्ठ भाग पर।
सत्ता स्फूर्ति सबको दे रही है निजानंद की ॥१॥
सारे विश्व के बाहर भीतर।
हृदय कमल में सूर्य मण्डल में,
जगमगा रही है ज्योति महानन्द की ॥२॥
यह संसार असार है अन्तिम।
एक ही ज्योति है अखण्डानंन्द की ॥३॥
सूर्य चन्द्र विद्युत और तारे।
अग्नि ज्योति है भवानन्द की ॥४॥
ज्योति बिना कुछ और नहीं है।
अहं ज्योति है ज्ञान यही है ॥
अहं ब्रह्मास्मि ज्ञान की ज्योति।
जग रही है घट घट परमानन्द की ॥५॥

श्रीगुरुं परमानन्दं वन्दे स्वानन्द विग्रहम् ।
यस्य सांनिध्यमात्रेण चिदानन्दायते तनुः ॥

ब्रह्मीभूत श्री १०८ स्वामी परमानन्द जी महाराज

ओं यज्जाग्रतो
ज्योतिषां ज्यो
ओं येन कर्माण
यत्पूर्व यक्षमन्त
ओं यत्प्रज्ञान
यस्मान्न ऋते

१. मेरा
में दूर जाता
दिव्य है—दूर
प्रकाशक है।

२. मेरा
बुद्धिमान्, त्रि
करते हैं, जो
विराजमान

३. मे
चेतनस्वरूप
ज्योति है

शिवसंङ्कल्प सूक्त

ओं यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति दूरङ्गमम्।
ज्योतिषां ज्योतिरेकन्तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥१॥
ओं येन कर्माण्यपसो मनीषणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः।
यत्पूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥२॥
ओं यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु।
यस्मान्न ऋते किञ्चन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसङ्कल्प-
मस्तु ॥३॥

(श्री १०८ महाराजजी कृत हिन्दी अर्थ)

१. मेरा मन कल्याणकारी शुभ इच्छा वाला हो, जो जागृत अवस्था में दूर जाता है और स्वप्न अवस्था में उसी प्रकार लौट आता है, जो दिव्य है—दूर जाने के समर्थ है—और प्रकाश का अर्थात् इन्द्रियों का प्रकाशक है।

२. मेरा मन शुभेच्छायुक्त हो—जिस मन से शुभ कर्म करने हारे बुद्धिमान्, विचारमान पुरुष यज्ञ में और पाप से लड़ने में अच्छे कर्म करते हैं, जो अद्भुत है और देवता स्वरूप है और जो सब प्रजा के अन्दर विराजमान है।

३. मेरा मन धर्मिष्ठ और हरिभक्त हो—जो मन ज्ञानस्वरूप, चेतनस्वरूप और धैर्यस्वरूप है और जो प्राणधारियों में एक अमर निरन्तर ज्योति है और जिसके बिना कोई भी कार्य नहीं होता।

ओं येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत्परिगृहीतममृतेन सर्वम् ।
येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥४॥
ओं यस्मिन्नृचः साम यजूँषि यस्मिन्प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः । यस्मिंश्चित्ँसर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥५॥
ओं सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिन इव ।
हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥६॥

---

४. मेरा मन परमेश्वरपरायण हो—जिस अमरशील मन से यह सब भूत, भविष्यत् वर्तमान जाना जाता है—और जिसके द्वारा सप्त-होता रूपी इन्द्रियों का यज्ञ होता है।

५. मेरा मन दिव्य विचारयुक्त हो—जिस मन में ऋक्, साम, यजु और जिसमें अथर्व वेद इस प्रकार रखे हैं जैसे चक्र की नाभि में अरे संयुक्त होते हैं, और जिसमें प्रजा की सब वस्तुओं का ज्ञान ओतप्रोत है अर्थात् जिस-जिस प्रकार वस्त्र में तन्तुवों की संतति होती है उस प्रकार मन में ज्ञान प्रतिष्ठित है।

६. जो मन कि मनुष्यों अर्थात् सब प्राणियों को इस प्रकार प्रेरता है, जैसे प्रवीण सारथी घोड़ों को चलाता है, तथा वागों से घोड़ों को रोकता है और जो मन हृदय में प्रतिष्ठित है और जो जरारहित और सबसे अधिक वेग वाला है—वह मेरा मन सच्चिदानन्द परमेश्वर के ध्यान में लगे व लीन हो।

ॐ हिरण्यगर्भसूक्तम्

ॐविश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव । यद्भद्रं तन्न आसुव ॥
ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥२॥
ॐ य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः ।
यस्य छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥३॥
ॐ यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव ।
य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥४॥

---

१. हे परमेश्वर, हे उत्पादक, सब बुराइयों को दूर कर। जो कुछ भलाई हो, वह हमें दे।

२. हिरण्यगर्भ परमेश्वर, जिसकी सामर्थ्य में ज्योतिष्मान् लोक है, आदि से वर्तमान है। केवल वही सृष्टि का साक्षात् स्वामी है। वह पृथिवी आकाश और इस दृश्यमान को धारण कर रहा है। हमें उस सुखस्वरूप परमेश्वर को भक्ति से पूजना चाहिए।

३. हमें भक्ति से उस आनन्दस्वरूप परमेश्वर को पूजना चाहिए जो अध्यात्म विद्या का और बल का दाता है। जिसको सब लोग पूजते हैं और जिसकी आज्ञा विद्वान् लोग पालन करते हैं, जिसका प्रतिबिम्ब मोक्ष और जिसका प्रेषक (क्रोध) मृत्यु है।

४. भक्ति से हमें सुखस्वरूप परमेश्वर का ध्यान करना चाहिए, जो अपनी महिमा से प्राणी, जंगम, जड़ वा एवमात्र राजा है, और जो दो पग और चार पग वालों पर राज्य करता है।

ॐ येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढ़ा येन स्वः स्तभितं येन नाकः।
यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषाविधेम ॥५॥

ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम् पतयो रयीणाम् ॥६॥

ॐ स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा।
यत्र देवा अमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त ॥७॥

---

५. हमें हृदय से आनन्दस्वरूप परमेश्वर का ध्यान करना चाहिए, जिसने गहन सूर्यलोक, दृढ़ पृथिवी और आल्हादक मोक्ष धाम को स्थापित किया है और जो आकाश में परमाणुओं को बनाता है।

६. हे प्रजापते ! तुझसे भिन्न इन उन सब उत्पन्नों को नहीं व्याप रहा (कोई दूसरा अध्यक्ष नहीं।) जो कामनाएं लेकर तेरी उपासना करे हमारी वह पूरी हों। हम धनैश्वर्यों के स्वामी हों।

७. वह हमारा बन्धु है, प्रादुर्भावित है (उत्पादक है,) (सारे विश्व ब्रह्माण्ड का) वह विधाता है, वह समस्त धामों और भुवनों को जानता है (सबमें सर्वत्र रमा हुआ सदा सर्वदा सब कुछ जानता है, हमारा सुख-दुःख पाप-पुण्य कहीं कुछ छुपा नहीं है, उससे कोई कुछ छुपा नहीं सकता,) जहां विद्वान् जन (जीवनमुक्त विदेह) अमृत आनन्दामृत पान करते हुए तीसरे धाम, तुर्य्या, सत धाम के ऊपर आनन्द धाम में विचरण किया करते हैं।

ॐ अग्नेनय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम ॥८॥

८. हे दिव्यस्वरूप, प्रकाशस्वरूप विज्ञान धन से सुख के लिए धर्मानुकूल मार्ग से समस्त प्रशस्त ज्ञानों को प्राप्त कराइये । सबको जानने वाले आप हम लोगों से कुटिलता रूप पापाचरण को पृथक कीजिए । आपके सत्कार-पूर्वक प्रशंसा का सेवन करें ।

———

वैदिक प्रार्थना मन्त्र

(वेद मन्त्रों के पूर्ण अर्थ निकालना कठिन है । केवल भावमात्र समझने के लिए सामान्य अर्थ प्रस्तुत किये हैं । अर्थों में शंका होने पर विघ्न ही होता है । क्योंकि ये स्वयंसिद्ध होते हैं इसलिए वेद मंत्रों का अनन्य श्रद्धा मात्र से पाठ करना ही फलीभूत होता है ।)

ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव । यद्भद्रं तन्न आसुव ॥१॥

ॐ यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा ॥२॥ यजु० ३९-१४

---

१. हे परमेश्वर, हे उत्पादक, सब बुराइयों को दूर कर । जो कुछ भलाई हो, वह हमें दे ।

२. हे प्रकाशस्वरूप प्रभु, जिस सात्त्विक बुद्धि को विद्वान् तथा रक्षक लोग प्राप्त होते हैं, उसी बुद्धि व धन से आज मुझे प्रशंसित बुद्धि वाला कीजिए । यह मेरी सत्य वाणी हो ।

ॐ द्विषो नो विश्वतो मुखाति नावेव पारय। आ नः शोशुचदधम् ॥३॥

ऋ. मं. १ सू. ९७

ॐ दृते दृꣳहमा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम् मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ॥४॥

यजु. अ. ३६-१८

ॐयतो यतः समीहसे ततो नोऽभयं कुरु ! शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः ॥५॥

ॐ ऋचं वाचं प्रपद्ये मनो यजुः प्रपद्ये साम प्राणं प्रपद्ये वागोजः सहोजौ मयि प्राणापानौ ॥६॥

---

३. हे सर्वज्ञ (विश्वरूप, सर्वत्र मुख वाले)हमको शत्रुओं में से सर्वथा पार कर, जैसे नौका समुद्र पार कराती है। हमारे पाप दूर कर।

४. हे दुःखविनाशक परमेश्वर, मुझको बड़ा करो। मुझको मित्र की आंख से सब प्रजा देखे। मैं मित्र की आंख से सब प्रजा को देखूं। मित्र की आंख से हम देखें, अर्थात् मित्र होवें।

५. जहां कहीं से भी तू चाहता है (अर्थात् भय देखता है) वहीं से हमें निर्भय कर दे। हमारी सन्तान के लिए (पुत्र पौत्रादिक के लिए) मगलकारी हो। हमारे पशुओं के लिए अभय हो।

६. ऋग्वेद मेरी वाणी में वर्तमान हो (प्राप्त होवे,)यजु मन में प्राप्त होवे। सामवेद प्राणों में प्राप्त होवे। वाणी तेजमयि हो। मेरे प्राण-अपान ओजसहित हों।

ॐ यन्मे छिद्रं चक्षुषो हृदयस्य मनसो वाचि तृष्ण* बृहस्पति मे तद्दधातु। शं नो भवतु भुवनस्य यस्पतिः ॥७॥ *(पाठ वृणं भी है)

ॐ नमस्ते हर्षे शोचिषे नमस्तेऽस्त्वर्चिषे। अन्यांस्ते स्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्यं शिवो भव ॥८॥

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवाः भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरंगैस्तुष्टुवाँसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥९॥

ॐ रुचं नो धेहि ब्राह्मणेषु रुचं राजसु नमस्कृधि। रुचं विश्वेषु शूद्रेषु मयि धेहि रुचारुचम् ॥१०॥

---

७. जो मेरी आंख में दोष (कमी त्रुटि) है, हृदय में, मन में, वाणी में बढ़ा हुवा है उसको बृहस्पति समाधान व मेंट दे। भुवनों का पति बृहस्पति वह हमारे लिए कल्याणकारक हो।

८. हर्ष देने वाले अग्नि देवता के लिए नमस्कार हो, लटा वालों के लिए नमस्कार हो। हमारा तेज अन्य (शत्रुओं) को तप्त करे। अग्नि देवता हमारे लिए कल्याणकारी हो।

९. हे पूजने वाले विद्वान् मनुष्यों, स्तुति करने वाले हम कानों से शुभ सुने, आंखों से शुभ देखें। दृढ़ अंगों से और शरीरों से जो आयु ईश्वर के अर्थ हो उसे पावें।

१०. हम बाह्मणों में प्रकाश भर दे, क्षत्रियों में प्रकाश भर दे, वैश्यों में प्रकाश भर दे, शूद्रों में प्रकाश भर दे (तथा) मुझमें अत्यन्त तेजस्वी प्रकाश भर दे।

ॐ प्रियं मा कृणु देवेषु प्रियं राजसु मा कृणु। प्रियं सर्वस्य पश्यत उत शूद्र उतार्ये ॥११॥

ॐ पिता नोऽसि पिता नो बोधि नमस्ते अस्तु मा मा हिंसीः ॥१२॥

य०अ० १-३७ मं० २०

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ॥१३॥

ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्, पश्येम शरदः शतं, जीवेम शरदः शतं, शृणुयाम शरदः शतं, प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शत भूयश्च शरदः शतात्। १४। य०अ०३६मं०२

११. मुझे देवताओ मे प्यारा बना दे, मुझे राजाओं में प्यारा बना दे, (मुझे) सब देखने वालों में, शूद्रों में और आर्यों में प्यारा बना दे।

१२. आप हमारे पिता हैं (पाति रक्षतीति पिता), हमको यथार्थ ज्ञान हो, और आपके लिए हमारा अनन्त बार नमस्कार हो, हमको अपने वियोग के दुःख से अर्थात् जन्म-मरण के दुःख रूप चक्र से हिंसा मत करो।

[यह स्वयंसिद्ध मृत्युंजय मंत्र है, इसमें अर्थ की अपेक्षा नहीं।]

१३. हम तीन नेत्रों वाले, अच्छी गंध वाले पुष्टि को बढ़ाने वाले (रुद्र, शंकर भगवान्) की पूजा करते हैं। मैं आप अमृत द्वारा बन्धन मृत्यु से ऐसे छूट जाऊँ जैसे ककड़ी, खरबूजा फिरने पर नाकू से अपने आप पृथक हो जाता है।

१४. वह ज्ञानियों का हितकारी चक्षु, ज्ञान नेत्र ही, शुद्ध पवित्र पहले से ही वर्तमान उदति है (उस प्रभु की कृपा से) हम सौ वर्ष तक देखें, सौ वर्ष तक जीयें, सौ वर्ष तक सुनें, सौ वर्ष तकप्रवचन करें, सौ वर्ष तक किसी के दीन न हों, और सौ वर्ष से अधिक आनन्द से रहें।

ॐ तेजोऽसि तेजो मयि धेहि, वीर्यमसि वीर्यं मयि धेहि, बलमसि बलं मयि धेहि, ओजोऽस्योजो मयि धेहि, मन्युरसि मन्युं मयि धेहि, सहोऽसि सहो मयि धेहि ॥१५॥

ॐ तनूपा अग्नेसि तन्वम्मेऽ ह्यायुर्दा अग्नेस्यायुर्मे देहि वर्चोदा अग्नेसि वर्चो मे देहि, अग्ने यन्मे तन्वा ऊनन्तन्म आपृण ॥१६॥

ॐ अभयं नः करत्यन्तरिक्षमभयं द्यावापृथिवी उभे इसे। अभयं पश्चादभयं पुरस्तादुत्तरादधरादभयं नो अस्तु ॥ अ०१९-१५-५

---

१५. तू तेज है, मुझमें तेज धारण कर (भर दे)। तू वीर्य है मुझमें वीर्य धारण कर। तू बल है, मुझमें बल धारण कर। तू ओज है, मुझमें ओज धारण कर। तू मन्यु (उत्साह) है, मुझमें उत्साह धारण कर। तू शक्ति है, मुझमें शक्ति धारण कर।

१६. हे अग्ने ! तू शरीर की रक्षा करने वाला है, तू मेरे शरीर की रक्षा कर। हे अग्ने! तू आयु को देने वाला है तू मुझे आयु दे। हे अग्ने! तू तेज को देने वाला है, तू मुझे तेज दे। हे अग्ने ! मेरे शरीर में जो भी कुछ कमी है तू उसे भर दे (पूरी कर दे)।

१७. अन्तरिक्ष हमारे लिए अभय करे। द्यौ और पथिवी ये दोनों हमें अभय करें। पीछे अभय हो, सामने, ऊपर और नीचे हमारे लिए अभय हो।

ॐ अभयं मित्रादभयममित्रादभयं ज्ञातादभय पुरोयः। अभयं नक्तमभयं दिवा नः सर्वा आशा मन मित्रं भवन्तु ।१८।अ०१९-१५-६

ॐ असतो मा सद् गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय मृत्योर्मा अमृत गमयेति ॥१९॥

ॐनमः शम्भवाय च मयो भवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ॥२०॥

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षँशान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिर्बनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वँशान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि ॥२१॥

---

१८. मित्र से अभय हो, अमित्र से अभय हो, ज्ञात (विषय) से अभय हो, परोक्ष (विषय) से अभय हो, रात्रि अभय हो, दिन अभय हो, सब दिशायें मेरी मित्र हों।

१९. हे प्रभु ! असत्य से मुझे सत्य की ओर ले जा; अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जा; तथा मृत्यु से अमरता की ओर ले जा।

२०. शान्तिप्रद और सुखस्वरूप देव को नमन, कल्याणकारी और सुखकारी देव को नमन, मगलमय और अधिकाधिक मंगलकारी देव का नमन।

२१. द्युलोक में शान्ति है, अन्तरिक्ष में शान्ति है, पृथिवी में शान्ति है, जलों में शान्ति है, औषधियों में शान्ति है, बनस्पतियों में शान्ति है, सब देवों में शान्ति है, ब्रह्म में शान्ति है, सबमें शान्ति है, शान्ति ही शान्ति है, वही शान्ति मुझमें अधिकाधिक बढ़े।

●

प्रार्थना

हे परमेश्वर ! परमपिता परमात्मन् ! आप हमारे संरक्षक और सहायक तथा प्रेरक हैं। हम सब मिलकर एक तुम्हारी ही भक्ति करें, तुम्हारे ही चरणों में श्रद्धा-भक्ति पूर्वक सिर झुकाते रहें और एक मात्र तुम्हारी ही सहायता चाहें। अय हमारे आत्मा जगदीश्वर ! आप अनन्त क्षमास्वरूप और दयालु हो। हे करुणासागर ! हम तुम्हें छोड़कर और किस की शरण लें ? केवल एकमात्र तुम ही हमारे आधार और अधिष्ठान हो। हे हमारे सर्वस्व परमात्मन् ! हम तुम्हारे पवित्र चरणों का वारम्बार प्रणाम करते हैं। आप ही हमारी टेक हो और पत रखने वाले हो, प्रतिज्ञा पर आप ही दृढ़ता के स्थिति स्थापक हो। हे अनन्त अपार प्रकाशस्वरूप, पवित्र-ज्योति परमात्मन् ! आप हमको श्रेयस्कर श्रेष्ठ मार्ग से अपनी प्राप्ति की ओर ले चलिए, आप ही हमारे सत्पथ प्रदर्शक नेता तथा संचालक हैं। हे अन्तर्यामिन् ! हम तेरे हैं, हमको अन्तर्यामी रूप से प्रेरणा करो कि हम तेरे उस मार्ग पर चलें जिस पर तेरे पूर्ण भक्त ऋषि-महर्षि चले हैं और जिस मार्ग द्वारा तुमको प्राप्त हो चुके हैं, जिन पर तुम्हारा परम अनुग्रह तथा प्रसाद हुआ हो। और हे सर्वशक्तिमान् हमारे प्रभु ! हमें उस मार्ग से कभी मत चलाओ जिस पर तेरे अभक्त चले

हों, और तुम्हारी प्रसन्नता से हम कभी वंचित न रहें। हे प्रभु ! तुम हमारे अन्तर्यामी प्रेरक सखा हो, हम तुम्हारी ही शरण हैं, अतएव हमारी रक्षा करो। हे जगदीश्वर, जगदाधार ! हमको वह पवित्र दृढ़ात्मिका बुद्धि प्रदान करो कि जिसमें केवल एकमात्र तुम्हारा ही दृढ़ विश्वास तथा निश्चय हो। हमको वह अहंकार दो जिसमें हम अपना आपा तुमको कह सकें, मन में तुम्हारा शिव-संकल्प उठे, चित्त में तुम्हारा ही चिन्तन रहे। हमारे नेत्र और हृदय खुले हों, और उन पर तुम्हारा पूरा अधिकार हो। हमारे सबके द्वारा केवल आपकी जय हो। आप हमारे जीवन के नियन्ता प्राणस्वरूप हो। हे स्वामिन् ! हमारी सब क्रियायें और चेष्टायें आपके चरणों में समर्पण होवें। हमारे भाव महान् उदार तथा गम्भीर हों। हम सब प्राणीमात्र को अपना ही आत्मात्मस्वरूप देखें और सबकी भलाई में अपनी भलाई समझें। अहर्निश परोपकार में रत रहें, और तुम्हारी ही भक्ति का सर्वत्र प्रचार करते हुए, अपने जीवन को सफल करते हुए, तुम्हारे पवित्र ज्योतिर्मय चरणों के समीप बैठने के योग्य बनें। हे पतितपावन ! दीनों का उद्धार करने वाले परमात्मन् ! हमको ऐसी उदार बुद्धि दीजिये कि जिससे हम दीन-दुखियों की सहायता सच्चे हार्दिक भाव से करें। हमें तुम्हारे प्रेम में ही जीवन प्रिय हो। हे

विश्वात्मा ! विश्वस्वरूप ! हम तुम्हारे भक्ति-मार्ग पर चलते हुए महान् दुःखों को भी सानन्द सहन कर सकें, तुम्हारे भजन में दृढ़ रहें, सबके साथ पवित्र प्रेम करें। हे प्रेमाकार ! हम सबको अपना ही आत्मा जानें, हमारा आचरण सबकी भलाई के लिए हो। हे अनन्तशक्ति परमात्मन् ! आपकी शक्तियें अपरिमित और बेअन्दाज हैं, तुम्हारी दात से कोई बढ़ नहीं सकता है। तुम्हारी दक्षिणा ज्योति की तरह सबके ऊपर जगमगा रही है। तुम्हारी शक्तियों और सच्चे उदार वचनों, मेहरबानियों का कोई नियन्ता नहीं है। कोई नहीं कह सकता है कि उसने मुझे नहीं दिया है, तुम्हारे द्वार से कोइ निराश नहीं गया है। सबने अभीप्ट फल प्राप्त कर जीवन का फल पाया है। हे राम, कृष्णादि अनन्त नामों और रूपों के धारण करने वाले सच्चे प्रभु ! अन्त में हमारी यही प्रार्थना है कि हम तेरे सच्चे भक्त बनें, तेरी ही भक्ति का प्रचार करें, हम सबके द्वारा तुम्हारी ही इच्छा पूर्ण हो, सर्वत्र तुम्हारा ही राज्य हो। हे अनन्त अपार ज्ञानानन्दस्वरूप ! आपको हमारा अनन्त धन्यवाद हो और आपका हमको आशीर्वाद हो। अतएव साञ्जलिबद्ध आपको भूयोऽपि नमस्कारों पर नमस्कार है। ओ३म् शं करोतु शंकरः ॥

———

ॐ तत्सत्

गायत्री मंत्र

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ॥

ओं=सर्वव्यापक, सबकी रक्षा करने वाले, **भूः**=सत्ता स्फूर्ति देने वाले सत्य स्वरूप, **भुवः**=सर्व दुखों के नाशक, चैतन्य स्वरूप और ज्ञान स्वरूप, **स्वः**=सुख स्वरूप, सबको सुख देने वाले, **तत्**=अनन्त अपार पर-ब्रह्म, **सवितुः**=सब जगत् को उत्पन्न करने वाले, प्रेरणा करने वाले, पवित्र करने वाले सविता देव, **वरेण्यम्**=भजनीय, उपासनीय वर्णन करने योग्य, तारीफ के लायक, **भर्गो**=सब पापों के भर्जन नाश करने वाले शुद्ध तेज स्वरूप, ज्योति स्वरूप परब्रह्म परमात्मा, **देवस्य**=ज्ञान, आनन्द और प्रकाश के देने वाले, दिव्य स्वरूप, परमात्मा का, **धीमहि**=हम सब ध्यान करते हैं। **धियः**=बुद्धियों को, **यः**=वह परमात्मा, **नः**=हमारी, **प्रचोदयात्**=धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष में प्रेरणा करे; संसार से हटाकर अपने स्वरूप में लगावे और शुद्ध बुद्धि प्रदान करे।

भावार्थ=हे सर्वव्यापक, सबकी रक्षा करने वाले, सत्ता-स्फूर्ति देने वाले, सत्य-स्वरूप, सब दुःखों के नाशक, चैतन्य-स्वरूप, ज्ञान-स्वरूप, सुख-स्वरूप, सबको सुख देने वाले, अनन्त, अपार, सब जगत् के उत्पन्न करने वाले, पवित्र करने वाले, सविता देव, भजनीय, उपासनीय, वर्णन करने योग्य, तारीफ के लायक, सब पापों को भर्जन नाश करने वाले, शुद्ध, तेजःस्वरूप, ज्योति-स्वरूप, ज्ञान, आनन्द और प्रकाश के देने वाले, दिव्य-स्वरूप परमात्मा का हम सब ध्यान करते हैं। आप हमारी बुद्धियों को

धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष में प्रेरणा करें। संसार से हटाकर अपने स्वरूप में लगावें और शुद्ध बुद्धि प्रदान करें।

गायत्री मंत्र में १ ओ३म्, २ भूः, ३ भुवः, ४ स्वः, ५ तत् ६ सवितुः, ७ वरेण्यम्, ८ भर्गो, ९ देवस्य —यह नौ नाम हैं। इन ९ नामों में भववान् की स्तुति की गई है। 'धीमहि' उपासना है। 'धियो यो नः प्रचोदयात्' यह प्रार्थना हैं। इसमें पांच अवसान हैं —'ओ३म्' यह प्रथम अवसान है, 'भूर्भुवः स्वः' दूसरा, 'तत्सवितुर्वरेण्यम्' तीसरा, 'भर्गो देवस्य धीमहि, चौथा, 'धियो यो नः प्रचोदयात् ओ३म्' यह पांववां अवसान है। प्रत्येक अवसान पर मंत्र जपते समय कुछ ठहरना चाहिए।

गायत्री मंत्र का सविता देवता है, अग्नि मुख है, विश्वामित्र ऋषि है, गायत्री छन्द है और उपनयन, प्राणायाम, और जप में विनियोग (इस्तेमाल) है।

यह गायत्री मंत्र आदि-मंत्र है। इस मंत्र का स्वयं परमात्मा ने ब्रह्मादि ऋषि-मुनियों को उपदेश किया हैं। गायत्री मंत्र सब मंत्र में बड़ा है। अन्य मतों की तो बात ही क्या है, वेद में भी इसके अतिरिक्त ऐसा कोई मंत्र नहीं जिसमें एक ही मंत्र में भगवान् की स्तुति, उपासना और प्रार्थना तीनों बातें हों। भगवान् के भजन में पहले भगवान् की स्तुति की जाती है, फिर उपासना ध्यान किया जाता है और पश्चात् भगवान् से प्रार्थना की जाती है। गायत्री मंत्र में स्तुति, उपासना और प्रार्थना तीनों हैं। जिस जाति का एक मंत्र नहीं है, उसका संगठन नहीं हो सकता। सब मंत्रों में गायत्री ही एक ऐसा मंत्र है जो हिन्दू मात्र के लिए एक मंत्र हो सकता है। भगवान् वेद में आज्ञा करते हैं कि समानो मंत्रः; 'तुम्हारा मंत्र एक हो। अतः हिन्दू मात्र का एक गायत्री मंत्र होना चाहिए।

इस मंत्र से प्रातः, मध्याह्न, सायंकाल और अर्ध रात्रि के समय इस प्रकार चार बार सन्ध्या करनी चाहिए। नौ नामों से भगवान् की स्तुति करे, फिर 'धीमहि' से भगवान् का इस प्रकार ध्यान करे— "योऽसावादित्ये पुरुषः सोऽसावहमस्मि ओ३म् खं ब्रह्म"—कि जो सूर्य में स्वर्ण जैसे रंग का प्रकाशस्वरूप पुरुष है वह मैं हूं। फिर "धियो यो नः प्रचोदयात्" से प्रार्थना करे। अर्थ सहित चाहे एक भी मंत्र दिन में चार बार जपो वह भी कल्याण का देने वाला है। वेद का मंत्र है, भगवान् की आज्ञा है, इससे पाप नष्ट होते हैं और ज्ञान का प्रकाश होता है। उपनिषद् में यह भी कहा है—

सायं प्रातः प्रयुञ्जानो अपापो भवति।
निशीथे तुरीयसन्ध्यायां जप्त्वा वाक्सिद्धिर्भवति॥

सायं, प्रातः काल जप करने वाला निष्पाप होता है। मध्य रात्रि में जप करने से वाक्-सिद्धि प्राप्त होती है।

सारभतास्तु वेदानां गुह्योपनिषदो मताः।
ताभ्यः सारस्तु गायत्रीं तिस्रो व्याहृतयस्तथा॥

चारों वेदों का सार उपनिषद् है और उपनिषदों का सार गायत्री है।

एवं यस्तु विजानाति गायत्री ब्राह्मणस्तु सः।

इस प्रकार से जो गायत्री को जानता है वह ही ब्राह्मण है।

या सन्ध्या सैव गायत्री द्विधा भूता व्यवस्थिता।
सन्ध्या उपासिता येन विष्णुस्तेन उपासितः॥

जो गायत्री है वही सन्ध्या है, और जो सन्ध्या है वही गायत्री है। जसने गायत्री की उपासना कर ली उसने परमात्मा की उपासना कर ली।

'गायत्री प्रोच्यते तस्माद् गायन्तं त्रायते यतः।'

इसका नाम गायत्री इसलिए है कि यह गाने वाले को संसार-सागर से पार कर देती है।

गायत्री वेदजननी गायत्री पापनाशिनी।
गायत्र्यास्तु परं नास्ति दिवि चेह च पावनम्॥

गायत्री मंत्र वेद की माता है, गायत्री मंत्र पाप नष्ट करने वाला है। गायत्री मंत्र के अतिरिक्त भूलोक तथा स्वर्गलोग में पवित्र करने वाला और मंत्र नहीं है।

मनु भगवान् ने कहा है कि विधियज्ञ से जपयज्ञ दशगुणा फलदायक है, इसमें भी जिसमें होठ ही हिले शतगुणा और मानसिक सहस्रगुणा फल देता है। लेटा-लेटा, बैठा-बैठा, डोलता-फिरता जिस भी अवस्था में हो मनुष्य गायत्री का मानसिक जप कर सकता है। इसके जपने में किसी प्रकार का भी दोष व विधि निषेध नहीं है, पुण्य ही पुण्य है। इसके जपने से सब कामना पूरी होती है और अन्त में स्वर्ग और मोक्ष की प्राप्ति होती है।

गायत्री का माहात्म्य

इस मंत्र को जो श्रद्धा-भक्तिपूर्वक जपेगा उसे अवश्यमेव भगवान् के दर्शन होंगे, मोक्ष मिलेगा, कल्याण होगा, सब पापों का नाश होगा, मनोकामना पूरी होगी। पुत्र के इच्छुक को पुत्र, धन चाहने वाले को धन, रोगी को नीरोगता, विजय चाहने वाले को विजय प्राप्त होगी; सिद्धि चाहने वाले को सिद्धि. ऋद्धि चाहने वाले को ऋद्धि, विद्या चाहने वाले को विद्या, भक्ति चाहने वाले को भक्ति, प्रेम चाहने वाले को प्रेम और प्रेम का आश्रय परमात्मा प्राप्त हो जायगा, इसमें सन्देह नहीं।

गायत्री—भाष्य व संध्या

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ ॥

यत्तेजः सवितुर्देवस्य वरेण्यं तदुपास्महे।
तत्तेजोऽमाकं बुद्धीः श्रेयस्करेषु नियोजयेत् ॥

हे तेजपुञ्ज ज्योति स्वरूप परमात्मन्! ज्ञान और आनन्द के देने वाले! विजय कराने बाले! प्रार्थना और स्तुति करने योग्य! सब को उत्पन्न करने वाले! सबका संहार करने वाले! सबकी रक्षा करने वाले! सबको प्रेरणा करने वाले! अनन्त, अपार, आनन्दस्वरूप! ज्ञानस्वरूप परमात्मन्! हम तुम्हारा ध्यान करते हैं। तुम्हारे गुण हम में प्रकट हों और हम तुमको प्राप्त हों। जो तुम हो सो ही हम हैं और जो हम हैं सो ही तुम हो। ऐसे ऐक्य-भाव से हम तुम्हारा ध्यान करते हैं। तुम हमारी बुद्धियों को पवित्र तथा धर्मार्थ काम और मोक्ष में प्रेरणा करो। हम में तेरी सच्ची भक्ति और प्रेम प्रकट होवे, सबको हम अपना ही आत्मा समझें। हमारे शत्रु नाश को प्राप्त हों। भीतर काम-क्रोध इत्यादि और बाहर हमारी उन्नति में बाधक विघ्नकारक शत्रु सब नष्ट हों, जिससे आनन्दपूर्वक हम आपको प्राप्त हों। धन्यवाद-पूर्वक हमारा आपको अनन्त बार नमस्कार हो। हमारी रक्षा करो, एकमात्र आप ही हमारे रक्षक हो।

दोहा—ओ३म् निरंजनं दुख भंजनं ररंकार ओंकार।
सत्य पुरुष सोऽहं तुही अलखं सर्वाधार॥

ओ३म् निरंजन ररंकार प्रभु सोऽहं सत्य नाम करतार।
अच्युत गुरु गोविन्द दातार परमानन्द रूप निरधार॥१॥
एक अखण्ड ज्ञान भण्डार तुमरी ज्योति का उजियार।
मैं, मैं, मैं पन सर्वाधार नेति नेति कर वेद उचार॥२॥
एक आत्मा अपरम्पार शंकर ब्रह्म सर्व का सार।
ओत प्रोत सब में निरंकार जीवन प्राण आप ओंकार॥३॥
हरि नारायण अग्नि तार देव देव में करहूँ पुकार
कृष्णानन्ताऽचलहं गौड़ हुँ फट अल्ला सर्व पसार॥४॥
बिनवो तुमको बारम्बार प्रीतम प्यारे करो उद्धार।
तद्वन गणपति नैनमझार होवे अनन्त तुम्हें नमस्कार॥५॥

———

आनन्दमानन्दकरं प्रसन्नं ज्ञानस्वरूपं निजबोधरूपम्।
योगीन्द्रसेव्यं भवरोगवैद्यं श्रीमद्गुरुं नित्यमहं नमामि॥
परं पराणां परमं पवित्र परेशमीशं सुरलोकनाथम्।
सुरासुरैरर्चितपादपद्म सनातनं लोकगुरुं नमामि॥
त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव॥
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वं मम देव देव॥
स्वराज्यसाम्राज्यविभूतिरेषा भवत्कृपाश्रीमहिमप्रसादात्।
प्राप्ता मया श्रीगुरवे महात्मने नमो नमस्तेऽस्तु पुनर्नमोऽस्तु॥

ब्रह्मानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिम्
द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं तत्वमस्यादिलक्ष्यम् ।
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीसाक्षिभूतम्
भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि ॥
ममात्मा परमात्मा विश्वात्मा विस्वस्वरूप
ब्रह्मात्मा सर्वात्मा सूर्यात्मा ज्योतिस्वरूप ।
अखण्डात्मा पूर्णात्मा ज्ञानात्मा ज्ञानस्वरूप
सुखात्मा चिदात्मा सदात्मा सत्यस्वरूप ॥
भावात्मा भवात्मा शून्यात्मा शून्यस्वरूप
ज्ञातात्मा ज्ञेयात्मा ध्येयात्मा ध्यानस्वरूप ।

ओं नमः शम्भवाय च मयोभवाय च । नमः शंकराय च मयस्कराय च । नमः शिवाय च शिवतराय च ॥

ओं द्यौः शान्तिरन्तरिक्षँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शांतिः वनस्पतयः शान्तिः विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वँ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि ॥ ओं शान्ति शान्तिः शान्तिः ॥

गुरु-वंदना

श्रीगुरुं परमानन्दं वन्दे स्वानन्दविग्रहम् ।
यस्य सन्निध्यमात्रेण चिदानन्दायते तनुः ॥१॥
गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात्परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥२॥

शुद्धी पत्र

पृष्ठ नं०	लाइन नं०	शब्द अशुद्ध	शब्द शुद्ध
१	४	मनीषणो	मनीषिणो
१	१५	विचारमान	विचारवान
२	१७	सारथी	सारथि
४	४	स्याम्	स्याम
६	६	समीक्षामहे	समीक्षामेह
६	१५	होवे	होवें
६	१८	मगलकारी	मंगलकारी
७	१	तृष्ण	तृष्णं
७	५	कर्णभि	कर्णेभि :
७	१८	बाह्मणों	ब्राह्मणों
८	५	ॐ	ॐ
८	९	शत	शतं
९	४	तन्वन्मेऽ ह्यायुर्दा	तन्वेम्मेऽपाह्मायुर्दा
९	६	इसे	इमे
१०	१	ज्ञातादभय	ज्ञातादभयं
१०	२	मन	मम
१०	३	अमृत	अमृतं

पृष्ठ नं०	लाइन नं०	शब्द अशुद्ध	शब्द शुद्ध
१०	१६	मगलमय	मंगलमय
१०	१६	मगलकारी	मंगलकारी
११	५	एक मात्र	एकमात्र
१४	६	दुखों	दुःखों
१४	८	को	के
१५	११	जा	जप
१५	२१	मत्र	मंत्र
१५	२२	समानो मंत्रः;	'समानोमंत्रः'
१६	१४	सारभतास्तु	सारभूतास्तु
१६	१५	गयात्रीं	गायत्री
१६	२२	जसने	जिसने
१८	७	बाले	वाले
१९	१६	सुरासुरैर्रचितपादपद्य	सुरासुरैर्रचित पाद पद्म
२०	२४	शांति: वनस्वतय	शान्तीर्वनस्पतयः
२०	१४	शान्तिः विश्वेदेवाः	शान्ती विश्वेदेवाः
१९	१५	पवित्र	पवित्रं
२०	१५	शान्तिर्ब्रह्म	शान्तिःर्ब्रह्म
२१	१४	लह	लहैं
२१	१५	परवाहगुरुजा	परवाह गुरुजी
२२	१३	से	के

आज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥३॥
यत्सत्येन जगत्सत्यं यत्प्रकाशेन भाति यत्।
यदानन्देन नन्दन्ति तस्मै श्रीगुरुवे नमः ॥४॥
अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शित येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥५॥
ध्यानमूलं गुरो मूर्तिः पूजामूलं गुरो पदम्।
मंत्रमूलं गुरो वाक्यं मोक्षमूलं गुरो कृपा ॥६॥

कीर्तन-ध्वनि

ॐ भर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ ॥१॥

महामंत्र है यह जपा कर जपा कर।
हरि ॐ तत्सत् हरि ॐ तत्सत् ॥२॥
अल्ला अक्का अम्बा देवी। परमानन्द लहं तेहि सेवी ॥३॥
वाहि गुरु श्री वाहि गुरुजी। वे - अन्त बे - परवाहगुरुजा ॥
दीन दयाल कृपाल गुरुजी। भगतन के रछपाल गुरुजी ॥४॥
अलख अपार अनाम अगोचर। ज्योति स्वरूप अकाल पुरुष हर ॥५॥
सत्यनाम सोऽहं दुःख भञ्जन। ररंकार ओंकार निरञ्जन ॥६॥
नमो नमो नित नमो नमो नित। नारायण चरणे नमो नमो नित
ओ३म् ओ३म् ओ३म् ओ३म्। नारायण हरि ओ३म् ओ३म् ॥८॥
रघुपति राघव राजा राम। पतित पावन सीताराम ॥९॥

राधाकृष्ण भज कुञ्ज विहारी। मुरलीधर गोवर्धनधारी।
शंख चक्र पीताम्बरधारी। करुणा सागर कृष्ण मुरारी ॥१०॥
अच्युतं केशवं राम नारायणम्। कृष्णदामोदरं वासुदेवं हरिम्॥
श्रीवरं माधवं गोपिका वल्लभम्। जानकी नायकं रामचन्द्रं भजे
गोविन्द गोविन्द हरे मुरारे। हर शिव शंकर भव त्रिपुरारे ॥१२॥
बं बं बं महादेव सदाशिव। हर हर हर महादेव सदाशिव ॥१३॥
गोपी प्रिय गोपीनाथ। गोपी जन वल्लभ ॥१४॥
श्रीकृष्ण चैतन्य प्रभु नित्यानन्दा। हरे कृष्ण हरे राम श्री राधे
गोविन्दा ॥१५॥
जय रघुनन्दन जय सिया राम। जानकी वल्लभ सीताराम ॥१६॥
गणपति दुर्गा रवि विष्णु शिव ॥१७॥
नन्दनन्दन घनश्याम श्री राधे राधे।
सीता से पति राम श्री रामा रामा ॥१८॥
बोल हरि बोल हरि हरि हरि बोल।
गोविन्द माधव मुकुन्द बोल ॥१९॥
राधा रमण हरि गोविन्द जय जय।
गोविन्द जय जय गोपाल जय जय ॥२०॥

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

ॐ सह नाववतु सह नौ भुनक्तु सह वीर्यं करवावहै।
तेजस्वि नावधीतमस्तु मा विद्विषावहै॥
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥ ॐ सर्वं वै पूर्णꣳ स्वाहा॥